मत्स्यकन्या और मैं

पंकज त्रिवेदी

मत्स्यकन्या और मैं
पंकज त्रिवेदी

मत्स्यकन्या और मैं

पंकज त्रिवेदी

Nawya

सुरेंद्रनगर

अनुक्रम

क्रम संख्या	कहानी	पृष्ठ संख्या
1	मत्स्यकन्या और मैं	14
2	शरबती	41
3	गुलाबड़ी	50
4	दरार	56
5	युक्ति	63
6	एक्सीडेंट	72
7	वो मीठा दर्द	80
8	एक मुफलिस एक मसीहा	87
9	बोआई की खुश्बू	92
10	चक्रव्यूह	99
11	अजीब दास्ताँ है ये	106
12	ढोल	113
13	एकलव्य	119
14	सवली	130

कम्बख्त जीवन भी तो ऐसा ही होता है

लेखन कभी भी अय्याशी नहीं होता। हर रचना लेखक के सामने एक चुनौती की तरह आती है और कहती है कि हिम्मत है तो उतारो मुझे कागज पर। उसे अपनी कहानी उतारने के लिए एक साथ कई तरह की समस्याओं से जूझना पड़ता है। कई बार तो सब कुछ सामने होते हुए भी वह कहानी की शुरुआत ही नहीं कर पाता और कई दिन तक इधर उधर डोलता रहता है कि अपनी बात को कहे कैसे। कई बार कहानी अधबीच में ही अटक जाती है तो कई बार लेखक कहानी के अंत को ले कर उहापोह में रहता है कि उसे किस मोड़ पर ला कर छोड़े कि कहानी एक माकूल सा असर छोड़ कर पाठक की जिंदगी का हिस्सा बने। कहानी लिखे जाने के बाद वह पाठक की ही तो हो जाती है।

लेखक के सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है अपने वक्त को सही तरीके से परख कर, पहचान कर उसे अपनी रचनाओं में दर्ज करना। लेखक आखिर वक्त को अपनी रचनाओं में सही तरीके से दर्ज करने के लिए ही तो लिखता है और अपने वक्त को अपनी रचनाओं में पूरी ईमानदारी से दर्ज करना ही उसकी सबसे बड़ी चुनौती होती है।

और आज के लेखक के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि इतनी तेजी से बदलते वक्त के साथ साथ कैसे ताल मेल बिठाये। वक्त हमेशा परिवर्तनशील रहा है लेकिन उसका पहिया इतनी तेजी से कभी नहीं घूमा था। एक बात बेशक मज़ाक में कही जाती है कि पहले पच्चीस बरस में पीढ़ी बदला करती थी और आज दुनिया के एक गांव बन जाने के बाद सूचना, ज्ञान और एक्सपोजर का इतना बड़ा विस्फोट हो रहा है कि बीस

बरस, पंद्रह बरस और दस बरस के बच्चों में आप तीन पीढ़ियों के दर्शन कर सकते हैं। इस गिनती में हमारी पीढ़ी की गिनती तो कहीं है ही नहीं। इस तेज गति के बदलाव को थाम पाना और अपनी रचना का विषय बनाना लेखक के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। हर वक्त में एक साथ कई पीढ़ियां हमारे सामने न केवल भरपूर जीवन जी रही होती हैं बल्कि एक दूसरे पर असर भी डाल रही होती हैं। कभी पीढ़ियों का अंतराल बहुत हुआ तो दो या तीन पी़ढियों में हुआ करता था जहां मूल्य आपस में टकराते थे। आज तो ये हाल है कि हमारे सामने कई पीढ़ियां आपस में कंधे रगड़ कर अपने पक्ष को सही ठहराने और दूसरे पक्ष को एक सिरे से नकार देने में भिड़ रही हैं।

यही भिड़ंत पिछली पीढ़ी के लेखक के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। वह इसे अपनी रचना का विषय कैसे बनाये। जब तक वह इसके एक पक्ष को समझने की कोशिश करता है, उसके दिमाग के पुर्जे ढीले कर देने के लिए कोई और विस्फोट हो चुका होता है और वह अपने को हताश निराश महसूस करता है। लेखक के सामने सबसे बड़ी तकलीफ उसके अप्रासंगिक हो जाने की होती है।

ऐसे में वह एक सुरक्षित, देखा भाला और टाइम टेस्टेड तरीका चुनता है कि वह सिर्फ उन्हीं विषयों पर कलम चलाये जिनके बारे में वह पूरे आत्म विश्वास के साथ लिख सकता है। ये विषय मानवता के विकास के पहले दिन से कथाकार के सामने हैं और उनके बारे में लिखने में उसे कोई खतरा नज़र नहीं आता। इन मनोभावों को अपनी कहानी का विषय बना कर लेखक अपने मन की बात भी कह लेता है और अपना लेखकीय दायित्व भी

ईमानदारी से निभा लेता है।

कथाकार पंकज त्रिवेदी ने अपने इस कहानी संग्रह में यही तरीका अपनाया है और काफी हद तक इसमें सफल भी रहे हैं।

पंकज त्रिवेदी के इस कहानी संग्रह की भूमिका लिखते समय मुझे एक बहुत मज़ेदार किस्सा याद आ रहा है। एक बार एक पत्रकार ने मेरे लेखन के बारे में बात करते हुए मुझसे पूछा था कि आप अपने पात्र कहां से लाते हैं तो मैंने हँसते हुए जवाब दिया था कि कहानियों के पात्र न तो तय करके कहीं से लाये जा सकते हैं और न ही लाकर तय ही किये जा सकते हैं। वे तो पहले ही हमारे आसपास होते हैं। बस उन्हें अपनी रचनाओं में उतारना भर होता है। बहुत सारी बातें होती हैं जो पात्रों के चयन का फैसला करती हैं।

"लेकिन किसी न किसी तरह से पात्र का चयन तो करते होंगे आप लोग?" पत्रकार ने ज़ोर देकर पूछा था।

मैंने कहा था उससे कि कोई व्यक्ति कब और कैसे हमारी किसी रचना का पात्र बनता चला जाता है और हमें पता भी नहीं चलता, बल्कि ये कहना भी बहुत मुश्किल होता है कि जो व्यक्ति हमारी किसी रचना का पात्र बना है, वह हू-ब-हू वैसा ही हमारी कहानी में उतरेगा भी या नहीं। कई-कई बार एक ही पात्र रचने के लिए हम बीसियों व्यक्तियों के जीवन की घटनाएँ उठाते हैं तो कई बार एक ही व्यक्ति के इतने रूप हमारे सामने खुलते हैं कि जितनी मर्जी कहानियाँ लिख लो।

"लेकिन कुछ न कुछ तो ऐसा होता होगा सामने वाले व्यक्ति में कि उसमें से आप लोग कहानी तलाश कर लेते हों।" पत्रकार हर हालत में मुझसे कहलवाना चाहता था कि आखिर पात्र कहीं तो होते ही होंगे जहां से हम

उन्हें ला कर, तराश कर अपनी रचनाओं के लायक बनाते हैं।
"होता भी है और नहीं भी होता। दरअसल, पहले से कुछ भी तय नहीं किया जा सकता कि सामने वाला व्यक्ति हमें सारी सम्भावना के बावजूद कोई कहानी देकर जायेगा ही।"
और जरूरी नहीं कि हमें मिलने वाले हर व्यक्ति में कहानी की सम्भावनाएँ नजर आयें ही। हो सकता है उस पर कहानी तो क्या लतीफा भी न कहा जा सके और ऐसा भी हो सकता है कि वह व्यक्ति मुझे इतना हांट करे और पूरा उपन्यास लिखवा कर ही मेरा पीछा छोड़े। लेकिन ये सारी बातें तो व्यक्ति विशेष से मिलने के बाद ही तय हो सकती हैं। किस बाँस से बाँसुरी बनेगी, ये तो बाँस देखकर ही तय किया जा सकता है।
मैंने पंकज भाई के कहानी संग्रह की भूमिका लिखते समय इस किस्से का जिक्र इसलिए किया कि जिस तरह मेरी या किसी भी लेखक की रचनाओं में अधिकांश पात्र अपने आस पास के जीवन से उठाये गये होते हैं, पंकज की लगभग सभी कहानियों के पात्र इस शर्त पर खरे उतरते हैं। वे आश्चर्य जनक रूप से हमारी अपनी ही जिंदगी का हिस्सा लगते हैं और हमें सहसा लगने लगता है कि अरे, हम खुद इस या हू ब हू इस जैसे व्यक्ति से खुद मिल चुके हैं और बात भी कर चुके हैं। जिस किस्सागोई की सुपरिचित स्टाइल में पंकज अपनी कहानियां ले कर आते हैं, यह बात उनकी कहानियों को और विश्वसनीय बनाती हैं और हम खुद को ठगा हुआ महसूस नहीं करते। वैसे तो कहा यही जाता है कि जीवन कहानी जैसा नहीं होता और कहानी जीवन जैसी नहीं होती लेकिन फिर भी हमें अच्छा लगता है जब कोई कहानीकार कोई बड़े दावे किये बगैर अपनी कहानियोंमें

रोज मर्रा के जीवन के उजले धुंधले पक्ष ले कर हाजिर होता है और ईमानदारी से और मुस्कुराते हुए हमसे शेयर करता है कि भई जो भी मैंने अपने लम्बे जीवन में देखा, महसूस किया है और जिससे मैं डिस्टर्ब हुआ हूं, कहानियों के रूप में आपके सामने पेश है। अब इनमें कितनी कहानियां बन पायी हैं या कहानियां बनते बनते रह गयी हैं, पाठक के रूप में आप ही तय करें। वह मुस्कुराते हुए यह भी कहता है कि आप विश्वास करें या न करें लेकिन जिस जीवन से ये कहानियां उठायी गयी हैं, वह ऐसा या लगभग ऐसा ही था। मैंने तो बस...। पंकज को इस लेखकीय ईमानदारी के लिए पूरे नम्बर दिये जा सकते हैं।

पंकज के इस संग्रह में कुल चौदह कहानियां हैं। सब कहानियों की लोकेशन या तो गांव है या गांव से सटा कोई कस्बा जहां से पंकज के पात्र उजड़ कर रोजी रोटी की तलाश में आये हैं। इन पात्रों में किसान हैं, मजदूर हैं, फैक्टरी के कामगार हैं, चपरासी हैं, उजड़े हुए लोग हैं, बेरोजगार हैं और यहां तक भिखारी भी हैं। एक बदलाव के तौर पर एक कहानी में विदेशी नाम वाले पात्र भी हैं। कुल मिला कर इन कहानियों के जरिये हम अपने आपको पंकज के जाने पहचाने गांव कस्बे में पाते हैं और वहां के जीवन का एक बायोस्कोप देखते हैं। कहीं कहीं हमें उनमें कहानियों में आये जीवन में पुरानेपन की महक आ सकती है। कहीं कहीं हम कहानियों के ट्रीटमेंट को ले कर असहमत भी हो सकते हैं और कह सकते हैं कि अरे इस कहानी को ऐसे नहीं वैसे लिखा जाना चाहिये था तो हमें ये भी याद रखना चाहिये कि ये पंकज की कहानियां हैं। उनके जीवन से आयी कहानियां । अगर हम इन कहानियों को लिखते तो वे पंकज की न हो कर हमारी कहानियां होतीं ।

हमें इसका तहे दिल से स्वागत करना चाहिये।

वे मूलत: कवि और लघुकथा लेखक हैं, पत्रकार और संपादक भी हैं इसलिए उनकी अधिकांश कहानियां भी बहुत छोटी और धारदार हैं। वे किस्से सुनाने वाली शैली के साथ हमारे सामने आते हैं और उसमें बहुत हद तक सफल भी हैं।

भले ही विषयवस्तु की नज़र से ये कहानियां पुरानी लगती हैं, लेकिन सभी कहानियों में वे एक सजग, सतर्क और ईमानदार ऑब्जर्वर की तरह नज़र आते हैं। वे इन कहानियों में कई जगह बेशक एक पात्र के रूप में दिखाई देते हैं लेकिन वे हम पर अपना लेखकीय पक्ष नहीं थोपते।

मैं यहां कहानियों के सार संक्षेप न दे कर पाठक का समय नहीं लेना चाहता। वैसे भी कहानियां तीन चार पेज की ही हैं। हां मत्स्य कन्या और मैं कहानी थोड़ी अलग है। कहानी में लम्बी कविताएं पिरोई गयी हैं। एक तरह से गीतों भरी कहानी है जिसमें प्यार है, विछोह है, करुणा है, प्रकृति है, उदासी है और शाश्वत जीवन मूल्य हैं।

चूंकि कहानियां छोटी हैं आम तौर पर हर कहानी के एक ही पक्ष को उजागर किया गया है। सभी कहानियों का लोकेल गुजरात और गुजरात का कस्बाई समाज ही है इसलिए कहानियों में गुजराती भाषा का स्वाद आना स्वाभाविक है। लगभग सभी कहानियों में आपसी रिश्तों की बारीकी से तह खोलने की कोशिश है। अलग अलग रिश्ते। एक खास बात तो कहानियों के पक्ष में है कि पंकज अपने देखे भाले समाज से ही कहानियां उठाते हैं और वही पेश करते हैं जो उन्होंने देखा और भोगा होता है। वे चाह कर भी अपने पात्रों से जादूगरी या बाजीगरी नहीं कराते । करानी भी

नहीं चाहिये। इससे जीवन के प्रति और जीवन में बनने वाले संबंधों के प्रति हमारी आस्था मज़बूत होती है। पाठक खुद को कहानी के पात्रों के करीब पाता है। यही सच्चा लेखकीय धर्म होता है।

कुल मिला कर संग्रह की सारी कहानियां हमें लेखक के एक ऐसे रचना संसार से रू-ब-रू कराती हैं, जहां टुच्चे स्वार्थ हैं, छोटी छोटी खुशियां हैं, मासूमियत है, रिश्तों की गरमाहट और उनका ठंडापन है, और जीवन के हर शेड के रंग हैं। कुछ मनभावन और कुछ आंखों को चुभने वाले भी। कम्बख्त जीवन भी तो ऐसा ही होता है।

पंकज के इस कहानी संग्रह का एक बार फिर स्वागत।

उन्हें अभी और लिखना है।

सूरज प्रकाश

मुंबई

कथात्मकता के आयाम

यह सत्य है कि अनुप्राणित संज्ञाओं द्वारा पूरक संज्ञाओं के प्रति आत्मीय भाव की अनुभूति ही प्रेम है। प्रेम अँकुरित हो जाय तो शाब्दिक हो जाने के कारण भी नहीं ढूँढता, न ही संप्रेषित होने से रह सकता है। इस तथ्य के प्रति सहमत होना होगा कि प्रेम अनुप्राणित जीवन की एक अनिवार्य प्रवृति है। किन्तु इस प्रवृति का हेतु अनुभूत भावदशा को प्रिय तक पहुँचा देना कई बार नहीं भी हो सकता है। इस भाव का ही बहिरंग स्वरूप है, स्वयं से बतियाना, स्वयं से ही सुनना, स्वयं से प्रश्न कर स्वयं से ही उनके समाधान पाना, फिर आश्वस्त भी हो जाना ! ऐसी मनोदशा प्रेम के अत्यंत गहन स्तर का द्योतक है ! प्रिय की अनुभूति हर क्षण, हर जगह जो होती है ! तभी तो कहते हैं, कि निर्विकार मौन तक में उद्दात प्रेम का प्रवहमान घूर्णन हो सकता है। ऐसी अनुभूति प्रेम की विशिष्ट दशा है।

उद्वेग की पराकाष्ठा के बावज़ूद प्रिय तक भावनाओं का न पहुँचना वस्तुतः कई तरह के क्लिष्ट सम्बन्धों का कारण होता है। इन क्लिष्ट सम्बन्धों के मूल में मांसल अनुभूतियों की अपेक्षाओं को नकारा नहीं जा सकता। किन्तु मांसल अनुभूतियाँ जहाँ एक ओर स्पर्श-सुख का मुखापेक्षी बनाती हैं, तो दूसरी ओर, इसके ठीक विपरीत, ऐसी कोई अनुभूति नितांत वायव्य भी हो सकती है। फिर भी, रूप प्रेम-अनुभूति की अनिवार्य शर्त हुआ करता है। अलबत्ता, रूप का होना अनुभूति सापेक्ष नहीं भी हो सकता है। यह वैयक्तिक प्रवृति पर निर्भर हुआ करता है। जैसा कि सूरदास के पदों-रचनाओं से निस्सृत आनन्द सापेक्ष अथवा भौतिक अनुभूतियों एवं स्पर्श-सुख से सर्वथा असंपृक्त है। प्रेम-अनुभूति का यह निराला रूप है। किन्तु,

सूर की रचनाओं के नेपथ्य में भी रूप की सशक्त उपस्थिति है।

भाई पंकज त्रिवेदीजी की लम्बी कथा 'मत्स्यकन्या और मैं' ऐसे ही जटिल रिश्तों के विभिन्न पहलुओं को समेटने का उन्मुक्त प्रयास है। कथाकार कई बिम्बों को समवेत साध लेने में सफल रहा भी है। कथाकार की भावुकता कई बार संवेदना के मानदण्डों पर व्यावहारिक नहीं दिखती। परन्तु, यह भी सच है कि कथाकार के साहित्याचार में भावुकता बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। विशिष्ट तो यह है, कि यही भावुकता इस कथा के लेखक की ताकत है। इसी ताकत के बल पर कथाकार अपनी गहन अनुभूतियों को आत्मीय आकार दे पाने में सफल हुआ है। ऐसी भावुकता 'रोमान्टिसिज्म' से कहीं प्रच्छन्न है, जो वड्सर्वर्थ का संबल था। प्रस्तुत कथा इस तथ्य का एक सशक्त उदाहरण है। कई अर्थों में यह कथा सान्द्रानुभूति का सहज पर्याय, एकालाप का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस एकालाप में आत्म-निवेदन भी नहीं, बल्कि असंप्रज्ञात हो जाने का भाव है।

प्रस्तुत कथा में चार बिम्ब हैं, नायक, मछली, मछलियों का संसार और सागर। इन चारों के माध्यम से कथाकार अपने 'स्व' को स्थापित करने में सफल रहा है। अभिव्यंजना अपने प्रायोगिक रूप में कत्तई नहीं है। परन्तु, इसकी प्रस्तुति विशिष्ट अवश्य है। पंकजभाई की यह कथा मनोवैज्ञानिक भंगिमाओं को पढ़ लेने के क्रम में निहितार्थ गढ़ने का अनावश्यक व्यायाम नहीं करती, बल्कि पाठक से सीधा संवाद स्थापित करने का प्रयास करती है। लेखक अतीत को जीता है। भोगा हुआ यथार्थ अतीत-प्रेषण के सहारे ही तो अभिव्यक्त होता है। इस प्रक्रिया में ऐसा कई बार हुआ है कि अतीत बिम्बों को छलांग जाता है। अतीत की अनभिव्यक्त भावनाएँ यदि अत्यंत सान्द्र हों तो ऐसा होता है। फिरभी, बिम्बों का प्रस्तुतियों में दर्शक बन

जाना कई बार सहज घटना नहीं मानी जाती । लेकिन, कथा 'मत्स्यकन्या और मैं' ऐसा होना सार्थक अपवाद बन कर सामने आया है । यह अच्छा भी लगता है क्योंकि कथा विधा का अत्यंत आवश्यक विन्दु 'कहानीपन' भली-भाँति पाठक को बाँधे रखता है ।

पंकजभाई की यह कथा कथात्मकता के आयाम को अवश्य ही एक नया विस्तार दे पायेगी इसकी पूरी आश्वस्ति है । तथाकथित यथार्थवादी कहानियों के दौर में ऐसी आश्वस्तियाँ हिन्दी-साहित्य के लिए आवश्यक भी हैं ।

इस कथा के लिए मैं पंकजभाई को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ ।

****

- सौरभ पाण्डेय

एम-II/ ए-17, ए.डी.ए. कॉलोनी,

नैनी, इलाहाबाद - 211008 (उप्र)

मो: 09919889911